

# सिंगरौली जिले में विस्थापित ग्रामीणों के जीवन शैली में बदलते हुए सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति

\*<sup>1</sup> श्याम बिहारी सिंह

\*<sup>1</sup> शोधार्थी- समाजशास्त्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

## Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 17/ May/2025

Accepted: 20/June/2025

## \*Corresponding Author

श्याम बिहारी सिंह

शोधार्थी- समाजशास्त्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

## सारांश:

एक ग्रामीण के लिए समुदाय का विस्थापन आजीविका की दृष्टि से और सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से एक आघात है। ग्रामीण समुदायों में विस्थापन के मुद्दों की जांच सिर्फ कागज में रहता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आदिवासी जो बाहरी दुनिया से अपेक्षाकृत अपरचित होता है। आधुनिक समय में विकास हेतु विभिन्न परियोजनाओं और तकनीकी व प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। और जिसके कारण हर साल, दुनिया भर में लाखों लोगों को बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाओं के कारण स्थान्तरण और विस्थापन करना पड़ता है मूल स्थान छोड़ने के पश्चात विस्थापितों के जीवन में अनेक परिवर्तन आते हैं विस्थापन के फलस्वरूप उंचित मुआवजा और पुनर्वास की व्यवस्था न होने के कारण एक गम्भीर समस्या समाज में दिखाई पड़ रही है। आधुनिकीकरण से प्रेरित विस्थापन जो ग्रामीण समुदायों के लिए एक चुनौती है जहाँ उनको समाज, परिवार, भूमि आदि से विघटित होना पड़ता है इसके अलावा से पूरा समुदाय प्रभावित होता है। अध्ययन में विकास परियोजनाओं से प्रभावित लोगों के बारे में साहित्य और व्यवहारिक रूप में एक अंतर पाया जाता है।

**मुख्य शब्द:** विस्थापन, ग्रामीण जीवनशैली, सिंगरौली जिला, सामाजिक - सांस्कृतिक स्थिति

## प्रस्तावना:

सिंगरौली जिला, जिसे "ऊर्जा का हब" भी कहा जाता है, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित है। यह क्षेत्र भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कोयला खदानों और बिजली संयंत्रों के लिए मुख्यतः प्रसिद्ध है। हालांकि, इस औद्योगिक विकास की कीमत यहाँ के ग्रामीण समुदायों को चुकानी पड़ती है, जो भूमि अधिग्रहण और औद्योगिकीकरण के कारण बड़े पैमाने पर विस्थापन का शिकार होते हैं। इस प्रक्रिया ने न केवल सिंगरौली जिले के ग्रामीणों की भौतिक स्थितियों को प्रभावित किया है, बल्कि उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में भी महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। किसी भी स्थान में विस्थापन और ग्रामीण जीवनशैली पर प्रभाव विभिन्न तरीकों से हुआ है जैसे;

**पहला रोजगार और आजीविका:** पारंपरिक कृषि और पशुपालन पर निर्भर ग्रामीणों को विस्थापन के कारण अपने खेत और जंगलों से वंचित होना पड़ा। नई परिस्थितियों में उन्हें औद्योगिक श्रमिकों या अस्थायी मजदूरों के रूप में काम करना पड़ता है, जिससे उनकी आजीविका अनिश्चित हो गई है।

**दूसरा आवास और बुनियादी ढांचा:** विस्थापित ग्रामीणों को अक्सर पुनर्वास कॉलोनियों में बसाया गया, जो उनकी पारंपरिक बस्तियों से

भिन्न हैं। इन कॉलोनियों में रहने की शहरी शैली उनके जीवन में असुविधा और असामंजस्य पैदा करती है, क्योंकि वे अपने मूल पर्यावरण और संसाधनों से कट जाते हैं।

**तीसरा शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव:** विस्थापन ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में कुछ हद तक सुधार किया है, लेकिन इसका लाभ सीमित लोगों को ही मिल पाया है। कई परिवार अब भी इन सेवाओं की लागत और गुणवत्ता से जूझ रहे हैं।

**सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति** में भी बदलाव हुए हैं जैसे पहला सामुदायिक संरचना: विस्थापन के बाद ग्रामीण समुदायों में पारंपरिक सामाजिक बंधन कमजोर हो गए हैं। नए स्थानों पर बसने के कारण रिश्तों में दूरी और सामूहिक गतिविधियों में कमी आई है।

**दूसरा परंपरागत रीति-रिवाजों में बदलाव:** ग्रामीण जीवन में त्योहार, विवाह, और धार्मिक आयोजन सामूहिकता और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक थे। विस्थापन के बाद इन आयोजनों का स्वरूप बदल गया है, और आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट दिखता है।

**तीसरा भाषा और पहनावा:** बाहरी प्रभावों और औद्योगिक समाज के संपर्क में आने से ग्रामीणों की भाषा, पहनावा, और खानपान में परिवर्तन हुए हैं।

परंपरागत पहचान को बनाए रखना अब चुनौती बन गया है। परंपरागत पहचान को बनाए रखना अब चुनौती बन गया है।

**चौथा महिलाओं और युवाओं की भूमिका:** विस्थापन ने महिलाओं और युवाओं की भूमिका में भी बदलाव किया है। महिलाएं अब भी पारंपरिक भूमिकाओं में सीमित हैं, लेकिन युवाओं में शिक्षा और रोजगार के नए अवसरों की ओर झुकाव देखा जा सकता है।

**प्रस्तुत शोध, सिंगरौली जिले में विस्थापित ग्रामीणों के जीवन शैली में बदलते हुए सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करता है। जिससे वहा के सामुदायिक और सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन किया जा सके।**

**उद्देश्य:** विस्थापन के फलस्वरूप ग्रामीण लोगों के जीवन शैली में बदलते हुए स्वरूप का सामाजिक व आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

### उपकल्पना- प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उपकल्पाएं हैं-

1. मूल स्थान में विस्थापन से पूर्व सामुदायिक रूप में आप लोगों की आर्थिक स्थिति कैसी थी?
2. पुनर्वास स्थल पर क्या आप लोग पहले की तरह सामुदायिक रूप में अपने सांस्कृतिक पर्व मानते हैं?
3. आप लोग ग्रामीण अंचल के सभी त्यौहार /पर्व अभी भी मानते हैं?
4. आप लोगों के जीवन में मूलतः खानपान और रहन सहन में क्या परिवर्तन आया है?
5. विस्थापन के फलस्वरूप सामाजिक विघटन से सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों में किस प्रकार प्रभाव पड़ा?
6. क्या पुनर्वास स्थल में पारिस्थितिकी? आप लोगों के अनुकूल हैं
7. आप लोग भोजन पकाने के लिये किस प्रकार के ईंधन का प्रयोग करते हैं?
8. आपके विचार से सरकार को कौन कौन सी सुविधाये विस्थापित स्थान पर प्रदान करने की आवश्यकता है?

**कार्यप्रणाली:** प्रस्तुत अध्ययन में सिंगरौली जिले में विस्थापित ग्रामीणों के जीवन शैली में बदलते हुए सामाजिक - सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न उपकल्पनाओं को अध्ययन करता है। प्रस्तुत अध्ययन में सिंगरौली जिले में विस्थापित ग्रामीणों के जीवन शैली में बदलते हुए सामाजिक - सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन निम्नलिखित सारणियों में वर्गीकृत किया गया है:

#### सारणी 1.1: सिंगरौली जिला: सामुदायिक स्थिति का तुलनात्मक वर्गीकरण

प्रश्न संख्या	विकल्प	आवृत्ति		प्रतिशत	
		आवृत्ति	पश्चात में	पूर्व में	पश्चात में
1	उच्च	13	21	11	18
2	मध्यम	69	33	57	27
3	निम्न	31	54	26	45
4	अतिनिम्न	7	12	6	10
	योग	120	120	100	100

उपरोक्त सारणी 1.1 में सामुदायिक स्थिति का तुलनात्मक वर्गीकृत किया गया है उत्तरदाताओं के अनुसार लोंगों की उच्च सामुदायिक स्थिति पूर्व में 11 प्रतिशत थी और पश्चात में 18 प्रतिशत है, वहीं मध्यम रूप से सामुदायिक स्थिति पूर्व में 57 प्रतिशत लोंगों की थी जबकि पश्चात में 27 प्रतिशत है, पूर्व में 26 प्रतिशत लोंगों की निम्न सामुदायिक स्थिति थी जबकि पश्चात में 45 प्रतिशत लोग निम्न सामुदायिक स्थिति है, पूर्व में 6 प्रतिशत थे और पश्चात में 10 प्रतिशत लोग अतिनिम्न सामुदायिक स्थिति है उपरोक्त आकड़ों से ज्ञात होता है की सामुदायिक स्थिति में गिरावट आई है।

प्रथम उपकल्पना का परिक्षण: सारणी 1.1 से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह देखा जा सकता है की सामाजिक संस्कृति परिवर्तन हुआ है सारणी 1.2 और 1.3 में अधिकांश उत्तरदाता यह बताते हैं ग्रामीण अंचल के तीज त्यौहारों का मानते हैं, जबकि सारणी 1.4 में लोंगों के खान-पान और रहन-सहन परिवर्तन आया जो आधुनिकीकरण के प्रभाव से प्रभावित हुआ है इस निष्कर्ष से उपकल्पना की सार्थकता निरस्त होती है अर्थात् उपकल्पना की पुष्टि नहीं होती है।

स्थिति प्रभावित हुई है अधिकांश उत्तरदाता मध्यम सामाजिक आर्थिक स्थिति के लोग हैं, लेकिन सारणी 1.1 में तुलनात्मक आधार पर सामुदायिक रूप से सामाजिक आर्थिक स्थिति में पूर्व की स्थिति की अपेक्षा गिरावट आई है इससे उपकल्पना की पुष्टि होती है।

#### सारणी संख्या 1.2: सिंगरौली जिला: पारम्परिक त्यौहारों मानाने की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	95	74
2	नहीं	00	00
3	कभी कभी	25	21
	योग	120	100

उपरोक्त सारणी 1.2 में पारम्परिक त्यौहारों की स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उत्तर दाताओं के अनुसार परम्परागत त्यौहारों और सांस्कृतिक परंपराओं को सामुदायिक रूप से 79 प्रतिशत अभी भी मानते हैं जबकि 21 प्रतिशत लोग कभी कभी मानते हैं।

#### सारणी संख्या 1.3: सिंगरौली जिला: ग्रामीण अंचल के त्यौहार और पर्व का वर्गीकरण

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	120	100
2	नहीं	00	00
	योग	120	100

उपरोक्त सारणी 1.3 में उत्तरदाताओं के अनुसार सभी लोग ग्रामीण अंचल के सभी त्यौहार और पर्व को अभी भी सभी लोग मानते हैं क्योंकि व्यक्ति की पहचान संस्कृतियों से ही जाना जाता है।

#### सारणी संख्या 1.4: सिंगरौली जिला: विस्थापन के पश्चात लोंगों के खान-पान और रहन-सहन

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	120	100
2	नहीं	00	00
	योग	120	100

उत्तर दाताओं के अनुसार सभी उत्तरदाता मानते हैं की विस्थापन के पश्चात लोंगों के खान-पान और रहन-सहन परिवर्तन आया है।

उपकल्पना का परिक्षण- सारणी 1.2, 1.3 और 1.4 से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह देखा जा सकता है की सामाजिक संस्कृति परिवर्तन हुआ है सारणी 1.2 और 1.3 में अधिकांश उत्तरदाता यह बताते हैं ग्रामीण अंचल के तीज त्यौहारों का मानते हैं, जबकि सारणी 1.4 में लोंगों के खान-पान और रहन-सहन परिवर्तन आया जो आधुनिकीकरण के प्रभाव से प्रभावित हुआ है इस निष्कर्ष से उपकल्पना की सार्थकता निरस्त होती है अर्थात् उपकल्पना की पुष्टि नहीं होती है।

#### सारणी संख्या 1.5: सिंगरौली जिला: सामाजिक विघटन के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पारम्परिक विघटन	04	03
2	व्यवसायिक विघटन	43	36
3	पारिवारिक विघटन	41	34
4	पारिस्थितिकी विघटन	32	27
	योग	120	100

उपरोक्त सारणी संख्या 1.5 में सामाजिक विघटन के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उत्तरदाताओं के अनुसार 3 प्रतिशत लोंगों का पारम्परिक पेशा विघटित हुआ है, 36 प्रतिशत लोंगों का व्यवसायिक विघटन हुआ है, और 34 प्रतिशत लोंगों का पारिवारिक विघटन हुआ है जबकि 27 प्रतिशत लोग बताते हैं की पारिस्थितिकीय विघटन हुआ है।

**सारणी संख्या 1.6:** सिंगरौली जिला: पारिस्थितिकीय की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	उच्चतम	00	00
2	सामान्य	71	59
3	कोई परिवर्तन	17	14
4	प्रतिकूल	32	27
योग		120	100

उपरोक्त सारणी संख्या 1.6 में पारिस्थितिकीय की स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उत्तरदाताओं के अनुसार 59 प्रतिशत लोग सामान्य परिस्थितिकीय बताते हैं और 14 प्रतिशत लोग मानते हैं की कोई परिवर्तन नहीं आया जबकि 27 प्रतिशत लोग पारिस्थितिकीय को पुनर्वासितस्थल में प्रतिकूल बताते हैं।

**सारणी संख्या 1.7:** सिंगरौली जिला: खाना पकाने के इंधन के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	गैस	75	62
2	कोयला	00	00
3	लकड़ी	45	38
4	अन्य	00	00
योग		120	100

उपरोक्त सारणी संख्या 1.7 में खाना पकाने के इंधन के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उत्तरदाताओं के अनुसार 62 प्रतिशत लोग खानापकाने के लिए गैस का प्रयोग करते हैं जबकि 38 प्रतिशत लोग अभी भी लकड़ी का प्रयोग करते हैं।

**सारणी संख्या 1.8:** सिंगरौली जिला: लोंगों की आवयशकता के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बेहतर रोजगार	49/120	41
2	पेय जल	90/120	75
3	अस्पताल	60/120	50
4	स्कूल	30/120	25
योग		120	100

उपरोक्त सारणी संख्या 1.8 में लोंगों की आवयशकता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उत्तरदाताओं के अनुसार 41 प्रतिशत लोंगों को बेहतर रोजगार चाहिए वहीं स्वच्छ पेय जल की मांग 75 प्रतिशत लोग करते हैं और अस्पताल और स्कूल के लिए 50 प्रतिशत और 25 प्रतिशत लोंगों की मांग है अर्थात् अभी भी विभिन्न सुविधाओं का आभाव है।

### निष्कर्ष:

इस लघु शोध में, मुख्य रूप से अतीत में हुए विभिन्न सर्वेक्षण और स्वंम के अवलोकन पर आधारित है सिंगरौली जिले में विस्थापन से प्रभावित हजारों परिवारों के सामाजिक आर्थिक दशाओं और आवर्ती विस्थापन पर केन्द्रीत है। यह विस्थापन का सिलसिला पिछले पांच

दशक से चला आ रहा है। सिंगरौली जिले के हजारों परिवारों को उनकी भूमि और घरों के अधिग्रहण के कारण सामान्य जीविकोपार्जन प्रभावित हुई है। प्रभावित लोंगों, (उनमें से सैकड़ों लोग बार-बार प्रभावित) अतीत में उनकी भूमि और/या घर के अधिग्रहण के कारण पर्याप्त आर एंड आर कार्यक्रमों की कमी, विभिन्न परियोजनाओं और लोंगों के बीच संघर्ष के कारण अनकहीं पीड़ाएं छुपी हुई है। वास्तव में, मेगा इंडस्ट्रियल/इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के कारण अनैच्छिक विस्थापन या आर एंड आर के खिलाफ सिंगरौली क्षेत्र में एक जोरदार आन्दोलन हुआ। इस तरह के आंदोलन अब पूरे भारत में उभरती हुई जा रही है आन्दोलन के कारण मेगा परियोजनाएं समाप्त हो रही हैं, और इसलिए बाजार में संचालित परियोजनाओं को स्थापित करने के लिए आर एंड आर की नीति के खिलाफ लोंगों और आम नागरिक समूहों द्वारा राज्य के संप्रभु अधिकार को चुनौती दी जा रही है। सिंगरौली क्षेत्र में विस्थापन के पहले के दो चरण दुख और कठिनाइयों की एक कहानी बताते हैं, जिसमें अधिकांश प्रभावित लोंगों के लिए जीविका के स्रोतों का विघटन भी शामिल है। 1980 और 1990 के दशक में 14,000 के कुल विस्थापित परिवारों में से उन में लगभग 4,523 को जिन्हें नियमित नौकरी मिली, मेगा थर्मल पावर और खनन परियोजनाओं में, यह दुर्भाग्यपूर्ण दशा थी जिसमें अधिकांश लोंग विस्थापन के कारण दशकों से पीड़ित है विभिन्न परियोजनाओं। के पिछले पांच दशकों में सिंगरौली क्षेत्र में अनैच्छिक विस्थापन से प्रभावित लोंगों का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक पहलु के परिणाम का अध्यनन और भविष्य की परियोजनाओं के लिए और प्रभावित लोंगों के अधिकारों के लिए संदर्भित हैं।

इस लघु शोध में उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तरों के विश्लेषण के बाद निष्कर्ष प्राप्त होंगे उनको दो भागों में बांटा गया है पहले भाग में उत्तरदाताओं के सामाजिक आर्थिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताया गया है तथा दुसरे भाग में शोध के मूल उद्देश्य से सम्बंधित निष्कर्षों को बताया गया है।

**उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि से प्राप्त निष्कर्ष जो निम्नलिखित हैं-**

- सभी उत्तरदाता के रूप में विस्थापित हुए लोंगों को ही लय गया हैं जिनको आसानी से समझने के लिए वर्ग अंतराल में बाँट दिया गया है।
- सभी उत्तरदाता में अधिकांश पुरुष हैं और कुछ महिलाएं जिनका अनुभव को साझा किया गया है।
- सभी उत्तरदाता विवाहित हैं और 47 प्रतिशत शिक्षित 53 प्रतिशत अशिक्षित हैं।
- अधिकांस उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप एकल परिवार है, जिसमें आश्रितों की संख्या 4-5 रहती है।
- विस्थापित उत्तरदाताओं में सभी जाति के लोंगों को लिया गया है, जिसमें अधिकांश आरक्षित वर्ग या जाति के हैं।
- अधिकांश उत्तरदाता BPL धारी हैं, जिसमें उनकी परिवार की वार्षिक आय 2 लाख कम है।
- सभी उत्तरदाताओं में अधिकांश विस्थापन से पूर्व में किसान और खेतिहार मजदूर थे, अब वर्तमान में अधिकांश सिर्फ मजदूर बन के रह गए हैं।

**अब अध्ययन की समस्या से सम्बंधित निष्कर्ष जो निम्नलिखित हैं-**

- सभी विस्थापित हुए उत्तरदाताओं में अधिकांश छोटे और मझौले कृषक और कृषक मजदूर थे, जिनका घर और भूमि सब कुछ अधिग्रहित हो गया है। जिससे लोग अकुशल मजदूर होने से आर्थिक स्थिति निम्न है और सामाजिक मूल्यों और मान्यताओं में कमी आयी है। एकल परिवार होने से व्यक्तिगत जीवन यापन ने आपसी भाईं चारों की प्रवृत्ति में भी कमी आई।

2. सभी उत्तरदाताओं की विस्थापन से पूर्व में उपजाऊ भूमि थी जिसे विस्थापन के दौरान अधिग्रहित किया गया है और बदले में उन्हें अधिकांश बंजर और पथरीली भूमि मिली है।
3. उत्तरदाताओं में अधिकांश उत्तरदाता पहली बार विस्थापित हुए हैं जिसमें 2000-2010 के दशक में अधिक विस्थापन हुआ है।
4. सभी उत्तरदाताओं में अधिकांश लोगों की निम्न मध्यम आर्थिक स्थिति पाई गई है, जिसमें अधिकतर कच्चे घरों में निवास करते हैं जिसमें मुख्यतः अकुशल मजदूर के रूप कार्य करते हैं उन्हें 10-15 km दूर कार्य करना होता है जहाँ गावं में महिला पुरुष दोनों साथ मिलकर कार्य करते थे वहीं, आज महिलाएं घर तक ही सिमट कर रह गई हैं।
5. अधिकांश उत्तरदाता बताते हैं की ग्रामीण स्वरूप के आधार पर सामुदायिक रूप से सामाजिक आर्थिक मध्यम थी अब निम्न ससदायिक स्थिति हो गई है अर्थात् सामुदायिक स्थिति में गिरावट आई है।
6. सभी उत्तरदाताओं में अधिकांश को पुनर्वास स्थल में रहने के लिए प्लाट दिया गया और अन्य व्यक्तिगत सुविधाएं नहीं दी गई। पुनर्वास स्थल में सार्वजनिक सुविधाओं का केंद्र बारे में बताते हैं जिसमें विजली, पानी, सड़क, स्कूल, और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों सुविधाएं बेहतर नहीं हैं।
7. पुनर्वास और पुनर्स्थापन के दौरान अधिकांश उत्तरदाता बताते हैं की मुआवजा और पुनर्वास संबंधित समस्याएं कम हुई हैं और पुनर्वास की नीति से अधिकांश उत्तरदाता संतुष्ट नहीं हैं।
8. अधिकांश उत्तरदाता बताते हैं खान-पान और रहन-सहन में परिवर्तन आया है आज ग्रामीण समाजों में भी गतिशील हो गया है, जिसमें अधिनिकिकरण के प्रभाव ने लोगों की आवश्यकता को बढ़ा दिया है आज सभी लोग बाजार पर ही निर्भर हैं।
9. ग्रामीण अंचल के तीज त्यौहार आज भी प्रचलित है और समय काल परिस्थितियों के साथ परिवर्तित हो रहे हैं, वहीं गावं के परम्परागत मान्यतायें और प्रथाओं का विघटन हुआ है क्योंकि मूल स्थान से विछङ्गने के बाद जीविकोपार्जन के जट्टीजहद में सब विलुप्त हो गया।
10. पुनर्वास स्थल में अधिकांश उत्तरदाता बताते हैं की परिस्थिकीय वातावरण का विघटन हुआ है, जिसके कारण लोगों के दैनिक जीवन में प्रतिकूल प्रभव पड़ा है आज लोगों को छोटे से घर में गुजरा करना पड़ रहा है, जो सिमित संसाधनों के साथ जिन्दगी थम सी गई है।

## सुझाव

### प्रस्तुत अध्ययन कार्य के निम्नलिखित सुझाव हैं-

1. वर्तमान में मसौदे में नए भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास और पुनर्वास विधेयक में इस विसंगति को ठीक किया जाना चाहिए। जब तक समुदाय के अधिकारों को कानूनी रूप से मान्यता नहीं दी जाती है और किसी भी प्रस्तावित निपटान पैकेज में शामिल नहीं किया जाता है, तब तक किसी भी भूमि का अधिग्रहण नहीं किया जाना चाहिए।
2. विस्थापित होने वाले समुदायों की मुक्त, पूर्व और सूचित सहमति लेने की प्रक्रिया होनी चाहिए। इसमें समुदायों को सुलभ और पर्याप्त जानकारी प्रदान करना और एक वास्तविक और खुला सार्वजनिक परामर्श देना शामिल होना चाहिए। लोगों को प्रस्तावित परियोजना के बारे में विस्तार से सूचित करने का अधिकार है और इससे उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।
3. लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण विधानसभा का मौलिक अधिकार है और इसे पुलिस द्वारा दबाया नहीं जाना चाहिए। अपनी असहमति व्यक्त करने वाले समुदायों को भयभीत, अपमानित और हमला नहीं किया जाना चाहिए।

4. प्रभावित समुदायों की आजीविका का मुद्दा दशकों से सिंगरैली में मूलभूत रूप से अनुत्तरित है। लोगों को एक शहरी पैटर्न में बसाया जाता है, जो आदिवासी समुदायों और कृषकों के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त है। भूमि के लिए मौद्रिक मुआवजे की पेशकश की गई एकमात्र प्रकार की क्षतिपूर्ति है। प्रशासन को लोगों को भूमि-आधारित मुआवजा प्रणाली शुरू करके अपनी पूर्व की आजीविका को बनाए रखने का एक वास्तविक विकल्प देखने की जरूरत है, जिसके माध्यम से अधिग्रहित कृषि भूमि को कृषि भूमि से कहीं और बदल दिया जाता है।
5. जिला प्रशासन को अपने उचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए पुनर्वास और पुनर्वास पैकेजों की निरंतर और पर्याप्त रूप से निर्गानी करनी चाहिए। यदि कोई विसंगति है, तो निजी कंपनी और या सार्वजनिक उपक्रम को इन खामियों के लिए जवाबदेह और दंडित किया जाना चाहिए।
6. उत्तरी कोलफील्ड्स लिमिटेड को परियोजना से प्रभावित समुदायों के बीच भूमिहीन लोगों, या दो एकड़ से कम भूमि वाले लोगों के रोजगार अधिकारों को शामिल करने और उनकी रक्षा के लिए अपनी मौजूदा पुनर्वास और पुनर्वास नीति की तलाल समीक्षा करनी चाहिए।
7. एक सक्षम निकाय द्वारा किए गए क्षेत्र में खनन और औद्योगिक परियोजनाओं का व्यापक मानवाधिकार प्रभाव आकलन होना चाहिए। इस आकलन की सिफारिशें विकास को सूचित करने के लिए की जानी चाहिए। भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास और पुनर्वास पर भविष्य की कोई नीति। जिन लोगों की जमीन पहले ही अधिग्रहित हो चुकी है, उनकी शिकायतों को दूर करने के लिए भी जमीन पर कार्रवाई की जानी चाहिए, लेकिन जिनके लिए केवल अपर्याप्त या अपूर्ण पुनर्वास को बढ़ाया गया है।
8. विस्थापित परिवर्तनों को नौकरी की पेशकश करते समय, कम से कम आधे कार्यबल के लिए महिलाओं को नियोजित करके एक निष्पक्ष लिंग संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता होती है।
9. विस्थापित हुए लोगों के पास अक्सर रोजगार खोजने के लिए आवश्यक कौशल नहीं होता है। जिला प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोगों को विस्थापित करने वाली कंपनियां उन लोगों की तकनीकी क्षमताओं के निर्माण के लिए पहल करें, जिससे कि उनके लिए उपयुक्त रोजगार खोजना आसान हो।

## संदर्भ सूची:

1. टर्मिस्की, बी. (2015), विकास-प्रेरित विस्थापन और पुनर्स्थापन: सामाजिक-कानूनी संदर्भ, आई बी ईडेम प्रेस, स्टटगार्ट, जर्मनी।
2. कपूर, एस. (2014), समाजशास्त्र विस्थापन: नीतियां और अभ्यास, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. जयपुर विकास प्राधिकरण, (2014) रिंग रोड प्रोजेक्ट, टाइम्स ऑफ इंडिया, बगराना, जयपुर,
4. कपूर, एस. (2014), समाजशास्त्र विस्थापन: नीतियां और अभ्यास, ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. बार अधिनियम (2014), भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्वास अधिनियम, 2013 में निष्पक्ष मुआवजा और पारदर्शिता का अधिकार, यूनिवर्सल पब्लिशिंग कंपनी प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
6. जयपुर मेट्रो रेल परियोजना (2013), "सुरक्षित देयता रिपोर्ट", एशियाई विकास बैंक।
7. भट्टाचार्य, पी. (2013), विकास-प्रेरित विस्थापन और मानव भारत में औद्योगिकरण के माध्यम से विकास, अफ्रीकी जर्नल ऑफ जियो विज्ञान अनुसंधान, <http://ajgr.rstpublishers.com>
8. घटक, एम. और अन्य। (2012), भूमि अधिग्रहण एन और मुआवजा: क्या वास्तव में हो गई? योजना, nov.13, से लिया गया <http://yojana.gov.in/cms/> (self c4snumscwsp4550bnvhtel)

- / pdf / Yojana / English / 2013 / Yojana /20Nvent/20/2013.pdf
- 9. <http://hindi.indiawaterportal.org/node/47813>
  - 10. <http://www.mediaforrights.org/reports/hindi-reports/2251>
  - 11. <http://www.jagran.com/editorial/apnibaat-9353790.html>
  - 12. <http://www.im4change.org.previewdns.com/hindi>
  - 13. Srivastava Ravi, Sasikumar SK. An Overview of Migration in India, its impacts and key issues, Migration Development & Pro-Poor Asia, 2003.
  - 14. [https://en.wikipedia.org/wiki/Accumulation\\_by\\_dispossession](https://en.wikipedia.org/wiki/Accumulation_by_dispossession).
  - 15. टोडारो, पी. (1977) इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑफ थर्ड वर्ल्ड, लॉनामैन, न्यू प्रेस, लंदन।
  - 16. भारतीय विधि आयोग (1958), कानून का अधिग्रहण और पुनः सरकार द्वारा भूमि का अधिग्रहण”, कानून मंत्रालय, दसर्ही रिपोर्ट।